आत्मिक वरदान

डा. जानसन सी फिलिप

Part 1

आत्मिक वरदान

डा. जानसन सी फिलिप

कापीराईटः 2021

Logos Literature
http://OnlyFreeBooks.com

आत्मिक वरदान

आज मैं आत्मिक जीवन से संबंधित एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय के बारे में आपको बताना चाहता हूं। विषय हैः आत्मिक वरदान। पवित्र बाइबल में वरदान और आत्मिक वरदान शब्दों का उपयोग कई बार हुआ है । इस कारण आप ने वरदान और आत्मिक वरदान शब्द कई बार सुने होंगे। अपने आप में यह बहुत ही महत्वपूर्ण एक विषय है और इसके बारे में अज्ञानता हमारे जीवन में बहुत अधिक नुकसान कर सकता है। विषय अपने आप में बहुत विशाल है और इस कारण हम इसको टुकड़े-टुकड़े में देखेंगे। पवित्र बाइबल में चार जगह इस विषय के बारे में काफी विस्तार से जानकारी दी गई है। ये 4 भाग हैं रोमियो की पत्री 12,

पहला कुरिन्थियों 12, 13, 14 इफीसियों 4, और पहला पतरस 4 ।

इन 4 हवालों में से आज हम पहला पतरस चौथे अध्याय को देखेंगे । चौथे अध्याय के 10 और 11 पदों में हम इस तरह पढ़ते हैंः 10 जिस को जो वरदान मिला है, वह उसे परमेश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह के भले भण्डारियों की नाईं एक दूसरे की सेवा में लगाए। 11 यदि कोई बोले, तो ऐसा बोले, मानों परमेश्वर का वचन है; यदि कोई सेवा करे; तो उस शक्ति से करे जो परमेश्वर देता है; जिस से सब बातों में यीशु मसीह के द्वारा, परमेश्वर की महिमा प्रगट होः महिमा और साम्राज्य युगानुयुग उसी की है।

यहां पहला वाक्यांश है, "जिसको जो वरदान मिला है"। यहां सबसे पहले मैं आपको याद दिलाना चाहता हूं कि हर मसीही विश्वासी को उध्दार के क्षण पवित्र आत्मा कम से कम एक विशेष योग्यता प्रदान करते हैं। इन योग्यताओं का हमारी स्वाभाविक योग्यताओं से कोई संबंध नहीं है। हमारी स्वाभाविक योग्यताएं हमें अपने मां-बाप और अपने परिवार से मिलती हैं। लेकिन इन से भिन्न पवित्र आत्मा द्वारा दी गई योग्यताएं अलग है। इन योग्यताओं को आत्मिक वरदान कहा जाता है। प्रभु के वचन में कई आत्मिक वरदानों की सूची दी गई है। इन सूचियों के आधार पर हम देखते हैं कि दूसरों को प्रभु यीशु के बारे में बताना, दूसरों की मदद करना, दूसरों को प्रभु का वचन सिखाना, दूसरों को प्रोत्साहन देना, सामान्य

से अधिक समय प्रार्थना में बिताना, प्रभु से मिले धनधान्य को दूसरों के साथ बांटना इत्यादि आत्मिक वरदानों के थोडे से उदाहरण हैं। लेकिन प्रभु का वचन यह भी स्पष्टता के साथ बताता है कि इनके अलावा और भी बहुत सारे आत्मिक वरदान प्रभु अपने बच्चों को प्रदान करते हैं।

इसका अगला वाक्यांश है "वरदान मिला है"। इस बात को खास ध्यान दें कि यहां यह नहीं लिखा है कि जिस जिस ने जो जो वरदान चुन कर पाया है बल्कि यह कि जो वरदान "मिला है"। प्रभु के वचन में जब हम वरदानों का अध्ययन करते हैं तब एक बात स्पष्ट हो जाती है कि वरदान विश्वासी लोग अपनी इच्छा से नहीं चुनते हैं लेकिन इनको पवित्र आत्मा अपनी इच्छा से दान

के रूप में देते हैं। इससे संबंधित एक बात मैं याद दिलाना चाहता हूं। आजकल हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं जहां दो चार वरदानों के ऊपर बहुत अधिक जोर दिया जा रहा है। बार-बार वे लोग यह दावा करते हैं कि विश्वासियों को प्रभु से मांग कर ये दोतीन वरदान प्राप्त करने चाहिए। लेकिन प्रभु का वचन बार-बार याद दिलाता है कि वरदान मांग कर नहीं लिए जाते बल्कि पवित्र आत्मा के द्वारा दान के रुप में दिए जाते हैं। इस कारण दूसरों के वरदानों को देखकर उनके बारे में लोभ लालच करने के बदले हमें से हर व्यक्ति को जो मिला है उससे खुश होकर उसका अधिक से अधिक उपयोग करना चाहिए। पवित्र आत्मा जानते हैं कि हमारे लिए क्या सही है क्या उपयुक्त है और वह पवित्र आत्मा हमको देते हैं।

अगला वाक्यांश जिस पर हमें ध्यान देना चाहिए वह है "वह उसे परमेश्वर के नाना प्रकार के"। यहां इस बात पर जोर दिया गया है कि वरदान परमेश्वर की ओर से मिलते हैं और वे नाना प्रकार के हैं। मतलब आत्मिक वरदान जब दिए जाते हैं तब उनमें एक बहुत बड़ी विविधता है। यह विषय यहां दोबारा याद दिलाना जरूरी। पिछले लगभग 100 सालों में दो-तीन वरदानों को बहुत अधिक बढ़ा चढ़ाकर बताने की आदत बहुत लोगों में पड़ गई है। वे लोग बार-बार अपने वरदानों को अन्य लोगों के वरदानों की तुलना में बहुत अधिक महत्वपूर्ण बताने की कोशिश करते हैं।

प्रभु के बच्चों को यह बात प्रभु के ही वचन से समझ लेनी चाहिए कि पवित्र आत्मा जब देते हैं तब सर्वेश्वर के हिसाब और मानदण्ड से देते हैं। उन में सो कोई भी वरदान किसी से कम नहीं होता। सर्वेश्वर के हिसाब से जब दिया जाता है तब एक या दो वरदानों के बदले विविध प्रकार के असंख्य वरदान दिए जाते हैं। जब एक धनी पिता अपने बच्चों को कुछ देते हैं तब कंजूसी से नहीं देते हैं। इसी तरह से मेरेआपके स्वर्गीय पिता जब मुझे और आपको आत्मिक वरदान देते हैं तब उन आत्मिक वरदानों में एक बहुत बड़ी विविधता हम देखते हैं। प्रभु का वचन इस बात को यहां जोर देकर याद दिलाता है कि प्रभु ने जो विविध वरदान दिए हैं उनका उपयोग उसी विविधता के साथ हम में से हर व्यक्ति को करना चाहिए।

अगला वाक्यांश है "नाना प्रकार के अनुग्रह के"। यह वाक्यांश हमको यह बात याद दिलाता है कि अत्मिक वरदान हमारी योग्यता के कारण नहीं दिया जाता है बल्कि यह परमेश्वर का अनुग्रह है। इसके दोनों पहलुओं को हमें समझ लेना चाहिए। पहली बात, आत्मिक वरदान हमको परमेश्वर के अनुग्रह के रूप में दिया जाता है। अनुग्रह का मतलब है हमारी योग्यता के बिना परमेश्वर अपनी कृपा दृष्टि हम पर करते हैं। दूसरी बात, जिस चीज को अनुग्रह के रूप में हमें दिया गया है जब हम उसका नियमित उपयोग करते हैं तब उसके कारण विश्वसियों को बहुत अधिक अनुग्रह मिलता है। तो इस वाक्यांश का अर्थ यह हुआ कि प्रभु अपनी दया में अपने बच्चों को विविध प्रकार के अनुग्रह देते

हैं जिनका उपयोग नियमित रूप से करना जरूरी है।

जब हम ऐसा करते हैं तब हमारे आत्मिक वरदान के कारण न केवल हमको अनुग्रह मिलता है बल्कि अन्य विश्वासियों को भी अनुग्रह मिलता है। इसका दूसरा पहलू यह है कि यदि हम अपने आत्मिक वरदान का उपयोग नहीं करते हैं तो हमारे द्वारा अन्य विश्वासियों को जो मिलना चाहिए वह नहीं मिलता है । यह एक गंभीर आत्मिक अपराध है। प्रभु ने हम सब को अपने शरीर के अंग के रूप में इसलिए रखा है कि हम एक दूसरे का ख्याल रखें। यदि हम अपने वरदानों के द्वारा एक दूसरे का ख्याल नहीं रखते तो हम प्रभु के विरुद्ध अपराध कर रहे हैं।

अगला वाक्यांश है "भले भण्डारियों की नाई"। प्रभु के वचन का यह हिस्सा जब लिखा गया उस समय लगभग हर परिवार में एक भंडारी होता था जो उस परिवार की सारी संपत्ति का उपयोग परिवार के लाभ के लिए करता था। प्रभु के वचन से ही इसका एक उदाहरण यदि ले लें तो वह है युसूफ । जब यूसुफ को पोतीफर के भवन में ले जाया गया तब उसकी योग्यता और उसके द्वारा जो अनुग्रह मिलता है उसे देख कर उसके स्वामी ने अपनी सारी संपत्ति यूसुफ के हाथ में दे दी जिससे कि यूसुफ उसका उपयोग अपने मालिक के लाभ लिए करें। जब प्रभु का वचन हमको याद दिलाता है कि हमारे आत्मिक वरदानों का उपयोग हमको भले भंडारी के रूप में करना है तो वह इस बात को याद दिलाता है कि आत्मिक वरदान प्रभु

ने हमारे हाथ इसलिए दिया है कि हम उसका उपयोग भंडारी के समान करें।

भंडारी के समान करने का मतलब यह है कि हम उसका उपयोग अपने मालिक के लिए करें। मालिक के लिए मालिक की संपत्ति का उपयोग करते समय हमें दो तीन बातों का ख्याल रखना चाहिए। पहली बात वह सारी की सारी संपत्ति उपयोग के लिए हमारे हाथ सौंपी गई है| लेकिन उसका मतलब यह नहीं है कि वह हमारी अपनी व्यक्तिगत संपत्ति है। हर व्यक्ति को यह बात याद रखनी चाहिए कि उसका आत्मिक वरदान उसकी अपनी व्यक्तिगत संपत्ति नहीं है। उसके हाथ में उपयोग के लिए वह संपत्ति दी गई है लेकिन संपत्ति के मालिक प्रभु हैं। इस कारण कभी भी हमें अपने वरदानों का उपयोग अपने

स्वयं के स्वार्थ के लिए नहीं करना चाहिए। दूसरी बात जब एक भंडारी मालिक की संपत्ति का उपयोग सही रीति से करता था तो मालिक के सारे परिवार के लिए उपयोगी सिद्ध होता था। ऐसी अवस्था में मालिक उस अनुग्रह का एक हिस्सा उस दास को भी देते थे।

अगला वाक्यांश है "एक दूसरे की सेवा में लगाए"। यह इस बात को स्पष्ट करता है कि विश्वासियों को आत्मिक वरदान उनके अपने स्वयं के उपयोग के लिए या स्वार्थ की पूर्ति के लिए नहीं बल्कि अन्य विश्वासीयों की सेवा के लिए दिया जाता है। मसीही जीवन एक पारिवारिक जीवन है। इस परिवार में हर एक व्यक्ति की जिम्मेदारी है कि वह परिवार के अन्य सभी सदस्यों का ख्याल रखें। जब हम

अपने आप के वरदानों का उपयोग दूसरों की सेवा में करेंगे और जब दूसरे लोग अपने आत्मिक वरदानों का उपयोग हमारी सेवा में करेंगे तब वरदानों का उपयोग "एक दूसरे" के लिए होगा। इस तरह जब सभी लोग अपनी अपनी जिम्मेदारी समझकर अपने अपने वरदानों का उपयोग करेंगे तब सारे आत्मिक परिवार में सभी लोग अनुग्रह पाएंगे। इस बात को कोई भी विश्वासी कभी भी ना भूले की आत्मिक वरदान एक बहुत बड़ी आत्मिक संपत्ति है। लेकिन इस संपत्ति का उपयोग हम में से कोई भी व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए ना करें। इन वरदानों का उपयोग एक दूसरे की सेवा के लिए करना है। इस तरह से आत्मिक परिवार में सभी लोग अपने अपने वरदानों का उपयोग करें इसके लिए ही ये वरदान दिए गए हैं।

हर भंडारी को कुछ बातों का ख्याल रखना जरूरी था। पहली बात, सारी संपत्ति उसके हाथ में है लेकिन वह उसकी व्यक्तिगत संपत्ति नहीं है। इस कारण उसे उस संपत्ति का उपयोग अपने मालिक के लिए और सिर्फ अपने मालिक के लिए करना है। कभी भी उस संपत्ति का उपयोग उसे अपने व्यक्तिगत कामों के लिए नहीं करना है। यदि कोई आत्मिक वरदानों का उपयोग अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए करता है तो उसे बहुत जल्दी ही उसकी सजा भुगतनी पड़ेगी।

दूसरी बात, जब वह अपने मालिक के लिए मालिक की संपत्ति का उपयोग करता है तो उसका अनुग्रह परिवार में सबको मिलता है। उसका एक हिस्सा उस भंडारी को भी दिया

जाता है। तीसरी बात इस तरह से जब किसी को भंडारी बनाया जाता है तो वह एक निश्चित समय के लिए होता है। निश्चित समय के बाद उस से हिसाब मांगा जाएगा। जब हिसाब मांगा जाएगा तब जो विश्वास योग्य होगा उसको और अधिक पुरस्कार दिया जाएगा। लेकिन यदि कोई व्यक्ति विश्वासयोग्य न निकले तो उसको निश्चित रूप से सजा दी जाएगी।

प्रभु यीशु ने दासों के उदाहरण में यह बात बताई थी कि एक बार जिस दास ने उसको जो एक सिक्का मिला था जब उसका उपयोग नहीं किया तो वह सिक्का उससे छीन लिया गया और उसको सजा दी गई। इसका मतलब यह है कि हम में से जिन जिन को आत्मिक वरदान मिले हैं वे लोग सावधानी से

अपने वरदानों का उपयोग करें। यदि नहीं करेंगे तो शायद हमारे जीवन काल में ही वे वरदान हमसे छीन लिए जाएंगे। जीवन के अंत में हिसाब देना भी पड़ेगा।

अगला पद हमको यह याद दिलाता है कि विश्वासियों को वरदान इसलिए दिए गए हैं कि उनके उपयोग के द्वारा वे इस तरह से भी व्यवहार करें जिससे उनके व्यवहार को देखकर लोग समझ सके कि वे परमेश्वर की संतान हैं। पद 11 का पहला वाक्य कहता है "यदि कोई बोले तो ऐसा बोले मानो परमेश्वर का वचन है"। यहां प्रभु का वचन यह नहीं कहता है कि हमारे मुंह से जो निकलता है वह परमेश्वर का वचन होना चाहिए। यह असंभव बात है।

परमेश्वर का वचन सिर्फ परमेश्वर के मुंह से ही निकल सकता है। इसलिए यहां प्रभु का वचन यह कहता है यदि कोई बोले तो ऐसा बोले "मानो परमेश्वर का वचन है"। मतलब जो लोग उसे सुनते हैं उन लोगों को हमारी वाणी में परमेश्वर की वाणी सुनाई देनी चाहिए। हमारी वाणी के बारे में उनकी टिप्पणी यह होनी चाहिए कि फलाना भाई या फलानी बहन बोलती है तो ऐसा लगता है जैसे हमने परमेश्वर की वाणी या परमेश्वर का वचन सुन लिया है । सुनने वालों के जीवन में हमारी वाणी के द्वारा इस तरह का अनुग्रह मिलना चाहिए जैसे कि परमेश्वर उनको अनुग्रह दे रहे हैं।

आप पूछेंगे कि यह संभव है क्या। निश्चित रूप से यह संभव है। मसीही जगत में ऐसे हजारों

लोग हुए हैं जिनकी वाणी सुनकर गैर मसीही लोगों ने यह टिप्पणी की कि यह व्यक्ति तो प्रभु यीशु का सेवक या दास मालूम पड़ता है। आज से लगभग 150 साल पहले साल्वेशन आर्मी नामक एक मसीही समूह का आरंभ हुआ था । इसके स्थापक थे जनरल विलियम बूथ। उनके चेहरे पर और उनकी वाणी में प्रभु के प्रति इतना समर्पण और इतनी कृपा थी कि देखने वाले लोग कहते थे कि जनरल विलियम बूथ को देख लिया प्रभु यीशु को देख लिया। जनरल विलियम बूथ मेरे आपके सामान इसी नश्वर शरीर में ही जीते थे। लेकिन इसके बावजूद यदि उनकी वाणी में लोगों ने परमेश्वर की वाणी सुनी तो मेरे आपके जीवन में भी ऐसा ही हो सकता है । शर्त यह है कि मैं और आप

भी हमको जो आत्मिक वरदान दिया गया है और हमको जिस बुलाहट से बुलाया गया है उसको समझ कर उसके अनुसार व्यवहार करें।

अगला वाक्यांश है, यदि कोई सेवा करें तो उसे शक्ति से करें जो परमेश्वर देता है। मनुष्य जब परमेश्वर की सेवा करता है तो वह या तो अपनी शक्ति से कर सकता है या परमेश्वर की शक्ति से दूसरे लोग जब इन बातों को देखते हैं तो उनको यह सारी बातें स्पष्टतया मालूम पड़ जाते हैं। यह पता चल जाता है कि यह व्यक्ति अपनी ताकत से कर रहा है या प्रभु की ताकत से कर रहा है।

प्रभु का वचन याद दिलाता है कि जिन जिन को आत्मिक वरदान दिया गया है, मतलब हर विश्वासी को, जब भी वह प्रभु के लिए कुछ

करता है तो वह प्रभु के द्वारा दी गई शक्ति से करें ना कि अपने मानुषिक बुद्धि और मानुषिक शक्ति से। इसके लिए जरूरी है कि हम जो कुछ करते हैं उसमें परमेश्वर पर आश्रय रखें और जब हम परमेश्वर पर आश्रय रख के कार्य करेंगे तब हमारे जीवन में अनुग्रह आयगा, दूसरों की जीवन में भी अनुग्रह आएगा और जो लोग देख रहे हैं वे लोग इस बात को समझ जाएंगे कि यह मनुष्य की शक्ति नहीं है। मनुष्य की शक्ति से इतनी सारी चीजें नहीं की जा सकती है बल्कि यह परमेश्वर की शक्ति है।

अगला वाक्यांश है "जिससे सब बातों में यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की महिमा प्रगट हो"। परमेश्वर ने हम को आत्मिक वरदान हमारे फायदे के लिए या हमारी ताकत दूसरों के सामने रखने के लिए नहीं दिया है। हमारी

महिमा दूसरों के सामने रखने के लिए नहीं बल्कि परमेश्वर की महिमा प्रगट करने के लिए दी है। जब परमेश्वर की महिमा प्रगट करने के लिए दी है तो वह प्रगट होना चाहिए लेकिन कई बार लोग स्वार्थ वश अपने आत्मिक वरदानों का उपयोग कुछ इस तरह से करते हैं कि उसके द्वारा उनके स्वयं की बढ़ाई और उनके स्वयं की महिमा होती है।

जो व्यक्ति परमेश्वर के द्वारा दिए गए वरदानों को समझता है उस व्यक्ति को सब कुछ ऐसे करना चाहिए कि महिमा अपनी नहीं परमेश्वर की हो। और उसके बारे में यह पद कहता है "सब बातों में यीशु मसीह के द्वारा"। यीशु मसीह के द्वारा का मतलब है एक विश्वासी जब अपने वरदानों का उपयोग करता है तब उन वरदानों के उपयोग के लिए प्रभु यीशु मसीह की अगुवाई का उपयोग करें। प्रभु हर

व्यक्ति के भीतर मौजूद है। हर व्यक्ति को दिशा निर्देश देते हैं। उसके द्वारा हम कार्य करें जिससे परमेश्वर की महिमा प्रगट हो।

इसके बाद का वाक्यांश है "महिमा और साम्राज्य युगानुयुग उसी की है। आमीन॥ कई बार जो आत्मिक वरदान हम को दिए जाते हैं वह अपने आप में इतने शक्तिशाली होते हैं कि उसके कारण हमको ऐसा लगता है कि हमारी महिमा और यह हमारा साम्राज्य है। दर असल यह न तो हमारी महिमा है न हमारा साम्राज्य है। यहां तक कि आत्मिक जगत जिसमें हम प्रभु के द्वारा दिए गए वरदानों का उपयोग करते हैं वह भी हमारा साम्राज्य नहीं प्रभु का साम्राज्य है। इसलिए प्रभु का वचन याद दिलाता है कि महिमा और साम्राज्य युगानुयुग प्रभु का हो या प्रभु का है।

प्रभु ने इन दो पदों के अध्ययन के लिए हमको जो मौका दिया उसके लिए मैं प्रभु का शुक्रगुजार हूं। मुझे उम्मीद है कि इन दो पदों के अध्ययन से आपको भी आपके आत्मिक जीवन में बहुत अधिक आशीष मिलेगी। अंत में सारांश के रूप में मैं फिर से याद दिलाना चाहता हूंः प्रिय भाइयों प्रिय बहनों हम में से जिन लोगों ने भी प्रभु यीशु को अपने मुक्तिदाता के रूप में ग्रहण किया है हमको जिस क्षण उद्धार दिया गया था उसी क्षण प्रभु ने कम से कम एक आत्मिक वरदान दिया है। ये आत्मिक वरदान पवित्र आत्मा ने अपनी इच्छा से और हमारे भविष्य को अपने मन में रखकर किया है

इसको या इस वरदान को समझना हमारे लिए जरूरी है दूसरों के आत्मिक वरदानों को देखकर उसके बारे में लोभ करने के

बदले हम अपने स्वयं के आत्मिक वरदानों को समझ कर उसका सही उपयोग करें, एक दूसरे की सेवा में लगाएं। जब ऐसा करेंगे तो दूसरों के जीवन में अनुग्रह आएगा और जब दूसरों को अनुग्रह मिलेगा तब वह अनुग्रह हमको भी मिलेगा। उनकी सेवा के द्वारा हमको भी अनुग्रह मिलेगा। इस तरह से चर्च या मंडली एक शरीर के रूप में, यह एक टीम के रूप में कार्य करें तब दुनिया में परमेश्वर की महिमा होगी प्रभु यीशु का वचन फैलेगा, लोगों को जीवन में तसल्ली मिलेगी, लोगों को जीने के लिए राह मिलेगा। इन बातों को समझने के लिए और हम में से हर व्यक्ति को अपने अपने आत्मिक वरदान सही रीति से उपयोग करने के लिए प्रभु हम में से हर व्यक्ति की मदद करें।

लेखक-परिचय

डा. जानसन सी फिलिप एक जानेमाने लेखक एवं बाईबिल प्रवचनकर्ता हैं।

लेखक क्वांटम न्यूक्लियर फिजिक्स, धर्मशास्त्र (थियोलाजी), वैकल्पिक औषधशास्त्र, एवं अन्य विषयों के विशेषज्ञ हैं।

उन्होंने तीन भाषाओं में 150 से अधिक पुस्तकों की रचना की है। इस लघु पुस्तिका को अधिक से अधिक लोगों के हाथों में पहुंचाने की कृपा करें.